विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत विषय श्यामउदय सिंह

ता:15-01-2020(एन. सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:षष्ठ: पाठनाम सूक्तिमौक्तिकम्

1. **अधोलिखितयोः श्लोकद्वयोः आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत-**

   I. **आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण**
   लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
   दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
   छायेव मैत्री खुलसज्जनानाम्।।

   II. **प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।**
   तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

   उत्तराणि-

   III. आशय यह है कि जैसे दोपहर से पूर्व की छाया पहले तो लम्बी होती है, फिर धीरे-धीरे घटती जाती है, उसी प्रकार दुष्ट आदमी की मित्रता पहले तो बहुत प्रगाढ़ होती है, परन्तु फिर क्रमशः धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसके विपरीत जैसे दोपहर के बाद की छाया पहले तो छोटी होती है, फिर धीरे-धीरे लम्बी होती जाती है, उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति की मित्रता पहले सीमित होती है, परन्तु बाद में प्रगाढ़ होती जाती है। इस दृष्टान्त को दृष्टिगत रखते हुए हमें दुष्टों और सज्जनों की मित्रता में अन्तर समझते हुए सज्जनों से मित्रता करनी चाहिए।

   IV. आशय यह है कि यदि हम सभी प्राणियों को खुश रखना चाहते हैं तो हमें हमेशा प्रिय बोलना चाहिए। मीठे वचन बोलने से कोई गरीबी नहीं आती।

2. **अधोलिखितपदेभ्यः भिन्नप्रकृतिकं पदं चित्वा लिखत-**

   i. **वक्तव्यम्, कर्त्तव्यम्, सर्वस्वम्, हन्तव्यम्।**
   ii. **यत्नेन, वचने, प्रियवाक्यप्रदानेन, मरालेन।**
   iii. **श्रूयताम्, अवधार्यताम्, धनवताम्, क्षम्यताम्।**
   iv. **जन्तवः, नद्यः, विभूतयः, परितः।**

   उत्तराणि-

   v. सर्वस्वम्
   vi. वचने
   vii. धनवताम्
   viii. परितः